

## “बालसंस्कार प्रशिक्षण शिविर” बुरहानपुर

श्रीगोपीनाथ आध्यात्मिक संस्थान एवं गुरुकुल पब्लिक स्कूल के सहआयोजन में “बालसंस्कार प्रशिक्षण शिविर” किया गया। इस प्रकार के अनुपम आयोजनों की आज के समय में अति आवश्यकता है जहां बाल मन पर संस्कार और संस्कृति को अंकित कर उनके जीवन की दशा और दिशा उत्तम पथ पर प्रशस्त हो। श्री श्री १००८ महाराजश्री शिशिरकुमार जी ने दीप प्रज्वलित कर आशीर्वचन प्रसारित किये।

पूज्य वेदान्ताचार्य श्रीगिरिराजजी शास्त्रीजी पे अपने उद्बोधन में कहा कि आधुनिक युग में नई पीढ़ी हमारी परम्पराओं पर सबाल पूछती है। हमारी परम्परा में साईंस और लाजिक है जिसकी समझ होना सबके लिये जरूरी है। किसी भी विषय की यथार्थ जानकारी से बच्चों में उत्साह एवं जागरूकता का संचार होगा। और तब भविष्य में यही बालक आने वाली पीढ़ियों को हमारी सनातन परम्परा प्रसारित कर सकेंगे।

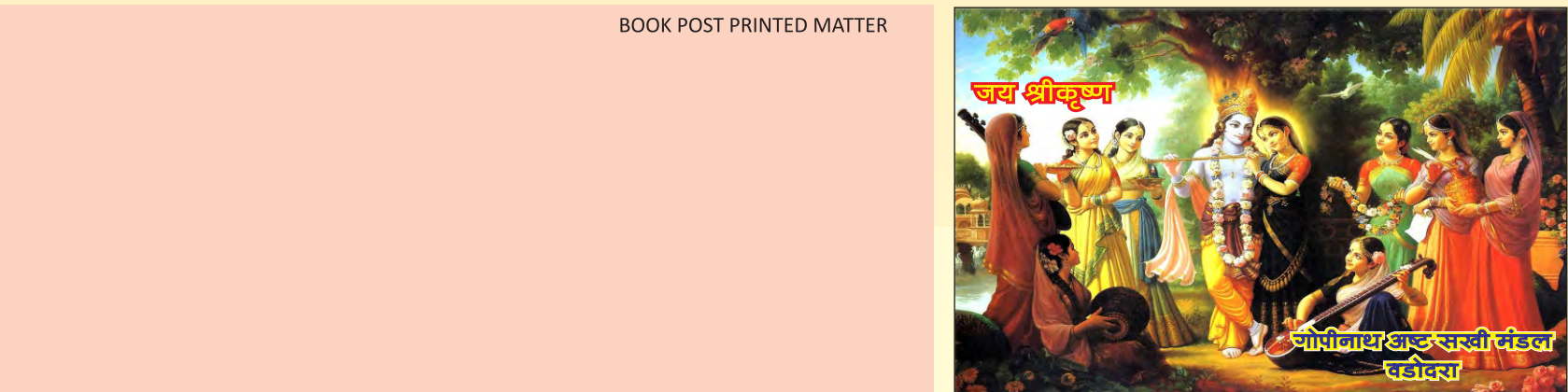


## बड़ोदरा- “श्रीगोपीनाथ जी प्रभु चरण” के प्राकट्य उत्सव

प्रति वर्ष की तरह इस बार भी “श्रीगोपीनाथ जी प्रभु चरण” के प्राकट्य उत्सव का आयोजन ‘श्रीगोपीनाथ आध्यात्मिक संस्थान’ व ‘गोपीनाथ ग्वाल मंडल (उत्सव समिति)’ के सौजन्य से किया गया। वल्लभ कुल के पू. पा.गो.१०८ श्री मधुरेश्वरजी महाराजश्री, पूज्यपाद गुरुवर्य पू. पा. गो.१०८ श्री चंद्रगोपालजी महाराजश्री, पू. पा. गो.१०८ श्रीयोगेश्वरजी महाराजश्री का मंगल मय सान्निध्य और आशीर्वचन का लाभ प्राप्त हुआ। आचार्य जनों ने श्रीगोपीनाथ जी के बारे में भ्रांत विचारों का खंडन करते हुए सम्प्रदाय में स्थापित और श्रीमहाप्रभुजी द्वारा रचित शास्त्रों में वर्णन के आधार पर विशेष रूप से यथार्थ बातों को बताया। पूज्य श्री गिरिराजजी शास्त्रीजी ने आगे श्रीगोपीनाथजी द्वारा रचित ‘साधनदीपिका’ और ‘सेवाश्लोका’ आदि ग्रंथों के बारे में उद्बोधन दिया। पूज्य श्रीमधुरेश्वर जी महाराजश्री ने बहुत सराहना करते हुए कहा कि नवोदित युवा विद्वान श्रीगोपीनाथजी के नाम से सर्व प्रथम संस्था खोल कर उनके प्रति जाग्रति लाने का काम और खोज का काम श्रीवृजेशकुमारजी और श्रीगिरिराजजी शास्त्रीजी कर रहे हैं जो गौरव की बात है इन उदात्त कार्यों में सदैव हमारा सहयोग और आशीर्वाद आपके साथ है। पूज्य आचार्यजनों और पू. श्री भगवत पांड्याजी आदि की गरिमामय सन्निधि में यह आयोजन सम्पन्न हुआ।



BOOK POST PRINTED MATTER



# यथार्थ मार्ग



Email : info@gopinathji.org

Visit us : www.gopinathji.org

facebook : ShreeGopinathji

What's app - 8141054545

वर्ष - प्रथम • अंक - ८ अक्टूबर/नवंबर २०१८ • शुल्क मासिक २०/वार्षिक २००/ विदेश -USA \$ 35, UK £ 30 • कुल पृष्ठ १० पृष्ठ क्रं. १

संस्थापक एवं मार्ग दर्शक - पुष्टि सिद्धान्त मर्मज्ञ पू श्री व्रजेश कुमारजी शास्त्रीजी सम्पादक - वेदान्ताचार्य पू. श्री गिरिराजजी शास्त्री

## सम्पादकीय श्री गिरिराजजी शास्त्री

संसार के समक्ष जितनी भयंकर और विस्फोटक समस्याएँ आज उपस्थित हुई हैं उतनी आज से पूर्व कभी भी नहीं थीं। ये कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि विज्ञान की चरम विकसित स्थिति ने हम मनुष्यों की हृदयस्थ भावों की भूमिका एवं दिशा को बदल के रख दिया है। जितनी सुविधाएँ विज्ञान के तहत बढी हैं उतना ही उसके अयोग्य उपभोग या दुरुपयोग से दिक्कतें परेशानियाँ बढी ही हैं। किन्तु ये हमारे अन्दर के संयम- समझ-और सुव्यवस्था से ही संतुलित हो सकता है और हम सही अर्थ में आनंद-शांति और सहजता प्राप्त कर सच्चे अर्थों में वीरत्व प्राप्त कर सकते हैं।

हाँ ये जरूर हमें ज्ञात होना चाहिये कि वीरत्व (वीरता) सही मायनों में है क्या? वीरत्व का प्रथम स्थाई भाव उत्साह है, और उत्साह हृदयगत भाव है, बुद्धि का व्यापार मात्र नहीं। जैसे प्राचीन समय में एक दूसरे के विरोधी वीर एक दूसरे के प्रत्यक्ष खड़े हो कर अपनी वीरता एवं शक्ति को सिद्धान्तों उसूलों और नीति के आधार पर प्रदर्शित करते थे। किन्तु आज प्रत्यक्ष की अपेक्षा वैज्ञानिक गणित के सिद्धान्तों के आधार पर वैज्ञानिक साधनों को जुटाकर कूटनीति-दुष्ट राजनीति के द्वारा दूसरों को धमकाने डराने वाला वीर समझा जा रहा है। पर सही में वीर वह होना चाहिये आज के परिप्रेक्ष्य में जो कि अपने मन-विचारों-इन्द्रियों को स्थिर कर प्रत्यक्ष रूप से दुष्टतत्वों से लड़ सके और अपनी शांति-सहजता-सरलता-और आनंद को बरकरार रख सके।

वर्तमान समय एवं स्थिति में अनेक प्रकार की सामाजिक कुरीतियाँ चल रही हैं जिन्हें दूर करने का प्रयास करते समय अनेक प्रकार के अवरोध सामने आयेगे पर उन सब से घबराये बिना उन्हें अपने आप पर प्रभु पर साद्गुरु पर पूर्ण आस्था रखते हुए पार करने वाला और नूतन समयोचित परिवर्तन परंपराओं में या समाज में लाने में अत्यंत उत्साहित होकर उसे तर्कसंगत विशिष्ट ज्ञान से सिद्ध करे वही वीर कहला सकता है।

तो आईये कुछ ऐसी वीरता प्रगट करने अपने अंदर का दीप जला के हमारे अंतर आलोक को प्रकाशित करने का संकल्प इस दीपावली को लें और उस हेतु कटिबद्ध हो निरन्तर आनंद को स्थापित कर सामाजिक शोषण से बचाकर नूतन समाज की स्थापना में नींव रखें।

## आचार्य वचनामृत



नी.ली.गो.षष्ठपीठाधीश्वर १०८ पू.पा.श्रीव्रजरत्नलालशुभ महाराजश्री (सुरत)

भुद्धावतारे त्वधुना हरौ तद्वशगाः सुरा , नानामतानि विप्रेषु भूत्वा कुर्वन्ति मोहनम् , अयमेव महामोहो , एतनमतमविज्ञाय सात्त्विका अपि वै हरिम् , मतान्तरै न सेवन्ते तदर्थं ह्येष उद्यमः ।

आ प्रकारे सात्त्विकोने अनेक रीते भ्रमलाभो ना प्रसंग आवतां श्रीकृष्ण भजन छूटी गयुं अने भगवत्प्राप्ति रूप मुख्य पड़ार्थथी जुवो विमुक्त थया. अने भगवत ११ स्कन्धमां जताव्या प्रमाणे अनेक पड़ार्थ मानवा लाग्या .

धर्ममेके यशश्चान्ये कामं सत्यं दमं शमम् , अन्ये वदन्ति स्वार्थं वा ऐश्वर्यं त्यागभोजनम् । वदन्ति कृष्णश्रेयांसि बहूनि ब्रह्म वादिनः ।

आ अनेक वाडो स्वधुध्यनुसार चालवा लाग्या .वेदाथं समजवा शक्तिहीन थया त्यारे प्रस्थानचतुष्टय पूर्वक निर्गुण भक्तिनुं प्रागट्य करवानाई र्छथाथी स्वयं श्रीठाकोरशु श्रीमहाचार्यचरण श्रीमहाप्रभुशु स्वरूपे आ भूतलपर पधार्था. अने जे ना पधार्था होत तो .सुष्टिव्यथा च भुवाम्निफल रहिता . आ शुद्धप्रेम वाणी सृष्टि व्यर्थ थय होत .जे जुवोपर विशेष अनुग्रह छे प्रभुनो ते जुवोने केवल अनुग्रह द्वारा ज स्व प्राप्ति काराववा स्वयं वरला करे छे. अने आ हवीं जुवोमां सूक्ष्म तापकलेश थय छे प्रभुथी हजारा वर्षोथी विपुटा पडवाने कारणे अने आ तापकलेश ज जे जुवोने घर-पुत्र-परिवार -प्राण-देह-आत्मा अने जेना धर्मो सहित प्रभुश्रीना शरणे लावे छे अने सदगुरु कृपाथी शरणे आवी प्रभुनो दास बने छे. दास्य धर्म जेमां प्रगट थय छे अने मात्र श्रीप्रभुज अमुं सर्वस्व बने छे अने अनन्य प्रेम द्वारा प्रभुने पोताना बनावे छे अने आथी प्रभु स्व प्रमेय बल थी जेना सर्व प्रतिबंधो दूर करी स्वप्राप्ति करावे छे अने जेना प्रेम करता थयथय छे आ ज पुष्टि छे अने

## यथार्थ

क्या है यथार्थ? और क्यों आवश्यक है अन्?



श्री गिरिराजजी शास्त्रीजी

सही अर्थों में धर्मगुरु आपके अन्दर जो है उसे प्रगट कर और प्रगति के मार्ग पर आपको अग्रसर करना ही उनका लक्ष्य होता है अतः गुरु में कभी राग द्वेष होता नहीं पर हमें उनके स्वरूप का और हमारे लिये उन्होंने कोन सी साधना निश्चित करी है इसका ज्ञान न होने से हम उन्हें नहीं समझ पाते और कुछ ऐसा कर बैठते हैं कि हमारी साधना की गति धीमी पड जाती है। जैसे कि हरेक पौधे को सम्भालने का तरीका व्यवस्था भिन्न भिन्न होती है पर वह कोई किसान या पेड़-पौधों का जानकार (माली) ही समझ सकता है ,और जैसे कोई (मूर्तिकार) शिल्पकार जब किसी पत्थर को देखता है फिर चाहे वह - टेडा - बांका - या दूटा - फूटा - काला या मैला ही क्यों ना हो पर .. शिल्पकार के हृदय में वह एक मूर्त बसी होती है और वही उसे उस पत्थर में दिखाई पडती है पर दुसरे व्यक्ति अगर वहां खडे हों तो सोचेंगे कि यह मनुष्य पागल है इसे ऐसे बेकार पत्थर में नाचता हुआ कृष्ण दिखाई पडता है ??

पर सच वही होता है कि उस पत्थर के भीतर एक नाचता हंसता हुआ प्रेम उस शिल्पकार को ही दिखाई देता है। और उसकी कई महिनों की कड़ी मेहनत और साधना एवं दिल से किये श्रम से ही जो लोग पहले उसकी हाँसी उडा रहे थे उन्हें वह अद्भुत अद्वितीय रमणीय लावण्यमयी मनोहारिणी नाचती हँसती प्रेम की मूर्ति दिखाई पडती है। और तब वह उसके सामने नतमस्तक हो जाते हैं। किन्तु..





आराध्य की अनन्य भक्ति साधना हेतु धर्म युक्त जीवन की महत्ता:-

सृष्टि का मूल स्वरूप श्री कृष्ण हैं। वेद कहता है कि समस्त सृष्टि ब्रह्मात्मक है। और भगवान का स्वरूप शास्त्र समझाते हैं कि भगवान सत, चित् और आनन्द हैं।

मतलब भगवान श्रीकृष्ण सत्य स्वरूप, ज्ञान स्वरूप, और पूर्ण आनन्द स्वरूप हैं।

रसरूप प्रभु की प्राप्ति के लिए शरणागति और भक्ति ही मार्ग है। इस भगवद् भक्ति और शरणागति की उत्तमता के लिये हमें सदविचार और सतकर्म से संस्कारी बनना चाहिए।

संस्कार की आवश्यकता क्यों?

हमारे अस्तित्व के दो हिस्से हैं। जन्म और कर्म.. जन्म हमारे हाथ में नहीं है पर कर्म हमारे हाथ में है, सदकर्म से इंसान संस्कारी बन सकता है और स्वयं का और समाज का भला कर सकता है। संस्कार का मतलब वस्तु के अंदर छुपी हुई उत्तमता को बाहर प्रकट करना। मानव में रहे हुए सद गुण को प्रकट कर के उत्तम व्यक्ति बनना वो मानव के संस्कार हैं।

असंस्कारी व्यक्ति आदरणीय नहीं होता। वह अपने जीवन का सदुपयोग भी नहीं कर पाता। हमें मानव देह मिली है उसको आलस, दुःसंग और धर्म विमुखता में व्यतीत करना मूर्खता है। इसलिए संस्कारी बनाना जरूरी है। संस्कारी बनने के लिए अच्छे विचार और अच्छे कर्म करने चाहिए।

सद विचार और सतकर्म:-किसी भी क्षेत्र में योग्य लक्ष्य को तय करके हम उस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कर्म करते हैं। योग्य लक्ष्य की

प्राप्ति के लिए योग्य विचार पूर्वक किये गये कर्म को सत्कर्म कहते हैं। जैसे परीक्षा में अच्छे नम्बर लाने के लिए नकल करना उत्तम नहीं, क्योंकि अच्छे नम्बर लाना पढाई का लक्ष्य नहीं है, पर पढाई का लक्ष्य उत्तम व्यक्तित्व का निर्माण है। नकल करके परीक्षा में अच्छे नम्बर तो आ सकते हैं पर उत्तम व्यक्तित्व नहीं बन सकता। इसतरह सिर्फ सफलता ही नहीं पर प्रमाणिकता भी महत्व की है। सद्दिचार के आधार से योग्य कार्य करे तो वो कर्म उत्तम बनता है। सद्दिचार और सतकर्म युक्त बनने के लिए हमारे व्यक्तित्व का आधार श्रेष्ठ होना चाहिए और वो आधार है धर्म।

धर्म:- जीवन जीने की शास्त्र सहित श्रेष्ठ रीति ही धर्म है। धर्म के सच्चे स्वरूप को समझ कर जीवन में उतारना चाहिए और उसके लिये सबसे पहले धर्म का प्राथमिक ज्ञान प्राप्त करना जरूरी है।

धर्म का ज्ञान धर्मशास्त्र के द्वारा:- धर्म विषयक ज्ञान जिस शास्त्र से मिलता है उस शास्त्र को धर्म शास्त्र कहते हैं। भगवान की प्रेरणा से ही ऋषि मुनियों ने धर्म शास्त्र को प्रकट किया है। हमारा धर्म किसी व्यक्ति ने नहीं पर

स्वयं भगवान ने कहा है।

धर्म दो प्रकार के हैं...१) देहधर्म, २) आत्मधर्म।

१- देहधर्म (परधर्म)- प्रत्येक जीव को कैसे समाज में जीना है वो बताता है, जो कि हरेक जीव के लिए है। इस देहधर्म के भी दो विभाग हैं ... (अ) विशेष धर्म, (ब) सामान्य धर्म।

(अ) विशेष धर्म- जो ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, और शूद्र के लिये वर्ण और आश्रम के भेद से बताया गया है। (ब) सामान्य धर्म- जो सबके लिए समान रूप से बताए गए हैं। धर्म के १० लक्षण मनुस्मृति में बताए गए हैं।



श्री वृजेशकुमारजी शास्त्री

## श्रीवृद्धमनंदन गोपीनाथ

यदनुग्रहतो जन्तुः सर्वदुःखातिगो भवेत् । श्रीगुरुः श्रीविठ्ठलनाथश्च विरचितं छात वंदना तमसहस्रवदा वन्दे श्रीमदवल्लभनन्दनम् ॥

- श्रीमती जगृती गोहील

श्री गोपीनाथज्ये प्रेम अने स्वर्ण सेवा ने ज मुप्य मानी ने अमारा कल्याण माटे साधन दीपिका मां आगण आपण ने राग-भोग अने श्रुंगार ना विषय ने पुण ज सरल अने सुंदररीतथी समजवी रखाछे. सामान्य रीते लोको मां श्री गुंसाईज्ये प्रभुयराद्वारा राग-भोग-श्रुंगार ना विषय विस्तारितछे अवेवीजाहाकारीछे. जेइकतग्रंथाध्यायन नी उपाय जुं ज कारछेते आ ग्रंथ द्वारा सिद्ध थाय छे.

राग, भोग, श्रुंगार ने समजवता श्री गोपीनाथज्ये जलावे छे के - (स्मरेभदगतो लीलां गायेतस्य गुणाङ्गिरा) प्रभु ना स्वर्ण अने लीलाओनुं स्मरए सहीत भावपूर्ण वाणीतीकीर्तन गान करवुं.

(अलंकृत्य ततः सिहासनेमुपवेशयेत्, हैयंगवीनपक्वान्नैःताम्बूलैः सुजलैर्यजेत्) अर्थातः प्रभु ने जगावी सर्व प्रथम सिंहासन ने अने पछी प्रभु ने अलंकृत करी प्रभुने गिराजमान करवा अने त्यारवाए प्रभु

ने सुंदर पकवान अने पान -बीडी साथे शीतल सुगंधित जण अरोगाववा. तेमज (ततोनीराजनं कार्यं मंगलं गीतवाघकैः) आम कहेता जलावे छे के मंगला अने राजभोग आरती ,कीर्तन गान मंगल रीते वाध, पनावज, तानपुरा, धृत्यादी सहीत करवुं.

(श्रंगारंजितैर्वस्त्रैश्चित्रैराभरणैरपि) प्रभु ने ऋतु अनुसार सुंदर रंग-वेरंगी वस्त्रो, श्रुंगार अने आभरणो साथे सुगंधि द्रव्योथी भाव पूर्वक सेववा. आनी साथे श्री गोपीनाथज्ये अलंकार अने वस्त्रो ना प्रकार जुं पण वर्णन कर्युं छे.

(तोयत्रिकेनतत्रापि धूपदीपादिनार्तिकम्) आगण आज्ञा करे छे के धूप-दीप आरती हमेशा ग्राण घंटा, वाध, तथा कीर्तन गान साथे करवा केम के (बिना नृत्य गानेनहरि प्रीति कथं भवेत्) आवी आज्ञा आ ज ग्रंथ मां करीने समजवे पण छे के नृत्य, गान, संगीत, विना प्रभु मां प्रेम केवी रीते संभव वने ?

माटे श्री गोपीनाथ महाप्रभु आ मार्गमां भक्ति ना मुप्य वे साधन, जेनी आज्ञा स्वयं श्री महाप्रभुज्ये करी छे तेना पर भार मुकेछे. १) स्वर्ण सेवा, २) प्रेम. अने तेना अतर्गत सर्व आचरण अने संस्कार शुद्धि सहीत वर्णाश्रमांदिधर्म ने जलावी रखा छे. साथे सेवामां पण राग-भोग-श्रुंगार, सेवाना आनुषंगिक श्लोक तेमज अष्टयाम नी सेवा ना कम आपज्ये भाव प्रमाणे व्यवस्थित गोठव्यो छे.

श्री गोपीनाथज्ये प्रभुसे सेवा मां उपयोगी श्लोक माटे अेक अलग ग्रंथ सेवश्लोक" नीरचना पण करी छे,.....- क्रमशः

श्री गोपीनाथज्ये प्रभुसे सेवा मां उपयोगी श्लोक माटे अेक अलग ग्रंथ सेवश्लोक" नीरचना पण करी छे,.....- क्रमशः



श्रीगुरुः श्रीगोपीनाथश्च प्रभुयरा



## गोपाष्टमी

- सुनीता शाह

कार्तिक सुद अष्टमी के दिन पहली बार प्रभु को यशोदा जी ने सुंदर श्रुंगार करके श्रीहस्त में लकड़ी देकर गोप सखाओं के साथ वन में गौचारण के लिए भेजा था। पुरुषार्थ की भावना के साथ पुत्र रूप में बाल्यावस्था से ही स्वकार्य करने का और पिता के व्यापार के विकास हेतु गौ-चारण के लिए माता-पिता ने भेजा था।

निकुंज लीला में प्रभु ने गौ चारण के माध्यम से पशु, पंक्षी, गोप, गोपीजन जैसे नित्यसिद्ध भक्तों को रस का दान किया। प्रभु ने टेर कदम, मधुवन, कामोदवन .. जैसे सभी वनों में गौचारण लीला करी है। गाय के भाव व्रजजन जैसे मुग्ध भाव होने के कारण गावें व्रज भक्तों का स्वरूप हैं और निःसाधन भक्त होने के कारण प्रभु गायों का रक्षण करते हैं। ऐसे ही जब जीव निःसाधन बन कर प्रभु सेवा और स्मरण करे तो प्रभु कृपा कर उन पर अनुग्रह करते हैं।

गौचारण का भौतिक भाव गायों को चारण कराना है, और आध्यात्मिक भाव.. 'गौ' अर्थात 'इंद्रियां' और 'चारण' अर्थात 'पोषण' है, और इस भाव के अनुसार प्रभु अंगीकृत जीव को विरह दान देने के लिए गौ चारण हेतु वन में पधारते हैं।

प्रभु को गायें अति प्रिय हैं। गाय के पृष्ठ भाग में ब्रह्मा, गले में विष्णु, मुख में रुद्र, मध्य में सर्व देवता, मूत्र में गंगा आदि पवित्र नदी, गोबर में लक्ष्मी जैसी शुद्धता, नेत्र में सूर्य-चंद्र के स्थान के भाव से गौ पूजन सर्वश्रेष्ठ है। जब प्रभु गौ चारण के बाद वेणु नाद करते हुए वन से लौटते हैं, तब प्रभु कृपा से कोई दैवीजीव को प्रभु के दर्शन हों इस लालसा से गोपाष्टमी के दिन भक्त जन गायों के गण को यथा शक्ति थुली, लड्डू आदि का चारण कराते हैं।



प्रभु स्वरूप का ज्ञान और प्राप्ति केवल भक्ति से...

हमें पुराणों में कई स्थान पर पढने में आता है कि भगवान के स्वरूप को जानने और प्रभु को पाने हेतु ऋषिमुनि असंख्य वर्षों तक ज्ञान साधना और कई तरह की तपस्या करने के पश्चात भी प्रभु स्वरूप को जान अथवा पा नहीं सकते हैं। व्रज भक्तो ने कोई दान-व्रत-तप जैसे साधनों का सहारा लिया नहीं था। फिर भी साक्षात् प्रभु उन के बीच प्रकट हुए थे। एसा कैसे?

परब्रह्म श्रीकृष्ण अन्य देवताओं की तरह यज्ञ- मंत्रजाप ।। तप जैसे साधनों के माध्यम से कोई फल देने के लिए बंधे नहीं हैं। शास्त्रों में व्रत, तप, उपासना, यज्ञ, मन्त्र, कर्म आदि अध्यात्मिक प्राप्ति के साधन कहे गए हैं। ये किसी भी साधान के माध्यम से हम श्रीकृष्ण के स्वरूप को जानने के और पाने के लिए असमर्थ हैं। और इसलिए किसी भी साधन के आश्रय से और उसके अभिमान के साथ श्रीकृष्ण को जानने और पाने की कोशिश कभी सफल नहीं होती।

केवल प्रभु श्रीकृष्ण की कृपा मात्र से, बिना किसी साधन से श्रीकृष्ण

अनुभूति एवं पुष्टि भक्ति प्राप्त हो सकती है, जैसे व्रज भक्तो को प्राप्त हुई। यह बात प्रभु स्वयं गीताजी में आज्ञा करते हैं....

“श्री कृष्ण का स्वरूप ज्ञान” - सुनीता शाह

“नाहंवेदैर्नतपसा न दानेन न चेज्यया। शक्य एवं विधोर्द्रष्टुं दृष्टवानसि मां यथा ॥११-५३॥ भक्तया त्वनन्यया शक्य अहमेवविधोऽर्जुन। ज्ञातुंद्रष्टुं च तत्त्वेन प्रवेष्टुं च परंतप ॥११-५४॥

अर्थातः - हे अर्जुन, न मुझे वेदों द्वारा, न तप द्वारा, न दान द्वारा और न ही यज्ञ द्वारा इस रूप में देखा जा सकता है, जिस रूप में मुझे तुमने देखा है। लेकिन अनन्य भक्ति द्वारा, हे अर्जुन, मुझे इस प्रकार (रूप को) जाना भी जा सकता है, देखा भी जा सकता है, और मेरे तत्व (सार) में प्रवेश भी किया जा सकता है, हे परंतप।

क्रमशः

### Payment method

चेक / ड्राफ्ट श्री गोपीनाथ आध्यात्मिक संस्थान के नाम पर बनाए और आपको दिये गये फॉर्म पे जो पता लिखा है उसपे भेजें। या I.D.B.I. बैंक की किसी भी शाखा में श्री गोपीनाथ आध्यात्मिक संस्थान के I.D.B.I. Bank's Saving A/c No. 289104000033974 में जमा करवा सकते हैं।

नकद भुगतान के लिए कृपया अपने स्थानीय संपर्क व्यक्ति को फोन करें जीनके नंबर नीचे दिये गये हैं।  
Vadodara - Gunjan Shastri-9374065710  
Sampadak-Satna - Kalpana Katara- 6261084284  
Burhanpur - Nitinbhai Patil-8989520502  
Junaghad - Bhaveshbhai - 7984025185  
Bombay- Apurva Kadakia -80970 47471

Devine Thoughts PUSHTI SEVA

Pushtiseva is most effective, scientific and very highly beneficial for a jivatman. Surrender, dedication and devotional love dispel anger, greed and passion.

Dear friends,

Therefore the dedication to Bhagavan is the only and the excellent means to get our sense -organs withdrawn from the lustful passionate enjoyment. Similarly the mind is the centre of desires, passions etc. The mind is a manufacturing factory of millions of passions and desires.



Puja Shri Brijlata Bahuji

caused by love) the mind which is ardently devoted to Bhagavan gets itself beyond the infatuation and the worldly attachment.

Thus this exclusive sense of servitude towards Bhagavan gets us the obtainment of the divine sense of being the amsha which is of immense importance of the path of knowledge believe that the exclusive sense of servitude towards Bhagavan in the path of devotion is the factor responsible for the increase of the inferiority-complex; what good can it do for us? But in reality any complex like that of inferiority or superiority is the cause of misery and it is misconceived.

The exclusive sense of servitude towards Bhagavan described in the path of devotion is devoid of either of these two types of complexes and is real. Any type of complex is a common materialistic concept and therefore on account of the sense of distinction caused by the ne-science these two complexes make us recognize the high and low with reference to the common material objects.

Continue...

This is the story of a prince called Rama, who fell in love with a beautiful princess called Sita, Rama and Sita got married. The king Dasharath wanted Rama to become king but one of his wives asked in return of her boon that her son Bharat to be made king and Rama to be sent into the forest for 14 years.

There was also a terrible demon king, Ravana. He had twenty arms and ten heads and was feared throughout the land. He wanted to make Sita his wife, one day a golden deer ran by them and Sita asked Rama and Lakshman to catch the deer for her as it was so beautiful.

When Rama did not return while Sita was alone a Ravana He asked Sita for somewhere to drink. Ravana took Sita to his Sita left a trail of her jewelry for Rama followed the trail of monkey king, Hanuman, who help find Sita. Messages were sent and through them to all the bears, who set out to find Sita.

When Hanuman told Rama where she was and then Rama went to fight Ravana, who sent his army to fight the battle with Rama and Hanumans army.

They fought for a long time until the only one left was Hanuman. He found some herbs to bring them all back to life, then Rama fought Ravana and killed him with a magical spear, Rama and Sita were together again. the whole world rejoiced. Rama and Sita began their long journey back to their land, and everybody lit oil lamps to guide them on their way and welcome them back. Rama was crowned king and Sita was his queen, and everyone in the kingdom was very happy.

Ever since people light lamps at Diwali to remember that light triumphs over dark and good triumphs over evil.



Lakshman went to look for him, came by in the holy man costume. rest and have some food and castle on a remote island. Clever Rama to follow.

glittering jewelry until he met the became his friend and agreed to to all the monkeys in the world,

DHARM PUZZLE

- Trupti Abrol

Grid of letters for a word search puzzle.

Find the words from the list in the below box :

- MAKAR SANKRANTI, MAHA SHIVARATRI, HOLI, NAVRATRI, RAMA NAVAMI, GUDI PADWA, HANUMAN JAYANTI, GURU PURNIMA, RAKSHA BANDHAN, JANMAASHTAMI, RADHASTAMI, GANESH CHATURTHI, VIJAYADASHAMI, DEEPAVALI, BHAI DOOJ

Answer to Last Puzzle

KRISHNA LILA word search puzzle grid and answer key.

श्री गोपीनाथ आध्यात्मिक संस्थान

Visit us at www.gopinathji.org

यथार्थ संपादक मंडल

- श्रीमती प्रभावेन शास्त्री, श्रीमती कल्पना कटारे, कु. निमिषा वेन पारेश्वर

यथार्थ व्यवस्थापक मंडल

- श्रीमती गुंजनबेन शास्त्री, श्री उमेश भाई वैष्णव

संस्थान के कार्यकलाप

- यथार्थ मार्ग (मासिक पत्रिका), ओडियो प्रवचन कैसेट, पुस्तक प्रकाशन, और वितरण, गोसेवा, अशक्त आर्थिक तकलीफ वाले व्यक्तियों की सहायता, सामान्य स्थिति वाले छात्रों को मदद, सत्संग सत्रो का आयोजन, अशक्त, आर्थिक तकलीफ वाले, अनाथ एवं ब्राह्मण हेतु, भोजन सेवा, वस्त्र सेवा, विद्या दान, औषधि सेवा, अन्न दान, अनन्त योजना

वड़ोदरा कार्यालय का समय (सुबह ११ से शाम ५)

सम्पर्क - मोबाईल 98255 13317, 9998107541

ट्रस्ट र.नं. (ई-४३७५(मैहसाणा) ता. १६ मार्च २००५) इन्कमटैक्स करमुक्ति का लाभ भी उपलब्ध है CIT/GNR/80G(5)/PTN-37/07-08/3233/12-13

Table of Vratotsav (Vipri Mah) with columns for date, day, and details of the vrat.



## दीपावली के पावन पर्व की बधाई ।

-कल्पना कटारे

आसों मास के तीन और नए साल के दो दिन मिलाकर जो पाँच दिन हैं, इन पाँच दिन को एक शब्द में दीपावली कहते हैं। दीपावली सबसे प्रमुख त्योहार है। कार्तिक माह की अमावस्या के दिन भगवान राम १४ वर्ष के वनवास के बाद अयोध्या लौटे थे, इस खुशी में अयोध्या वासियों ने दीये प्रज्वलित कर उनका स्वागत किया था। श्रीकृष्ण ने नरकासुर नामक राक्षस का वध भी इसी दिन किया था। यह दिन भगवान महावीर स्वामी का निर्वाण दिवस भी है। इन सभी कारणों से हम दीपावली का त्योहार मनाते हैं।

दीपों का त्योहार दीपोत्सव के दिनों के लिए घर में साफसफाई कर के वातावरण को पवित्र बनाया जाता है। और धूपदीप के साथ लक्ष्मी पूजन भी होता है। पर इन दीपों से बाहर का अँधेरा थोड़ी देर के लिए जरूर दूर होता है किन्तु हृदय का अज्ञान रूपी अँधेरा तो सत्संग, स्मरण, कीर्तन दर्शन और प्रभुसेवा से ही दूर हो सकता है। और ऐसा सत्संग, स्मरण, प्रभुसेवा ..केवल गुरुभक्ति और गुरुकृपा से ही प्राप्त हो सकती है। जिस प्रकार सालभर में जो अनावश्यक वस्तुएं घर में एकत्रित हुई उन्हें हम दीवाली के पहले बाहर निकाल देते हैं वैसे ही हमारी जन्मों जन्मों से एकत्रित हुई अशुभ कर्मों की कलमश गुरु कृपा से प्राप्त ज्ञान से दूर हो।

'प्रभु ही मेरे सब कुछ हैं' यह भाव हृदय में प्रकाशित करने ही दीवाली के दीपों की महत्ता है। और यही आंतरिक भाव को प्रकाशित करने हेतु हमारे श्रीगोपिनाथ जी प्रभुचरण दिवाली के पर्व पर प्रभु से विनती करने को कहते हैं.....हे ब्रजाधिप! जिस प्रकार आपने नन्दरायजी द्वारा किये गये दीपावली के लौकिक विधान को, लौकिक परम्पराओं के विधान को अपनी आत्मा में उन भक्तों को प्रवेश देने के लिए स्वीकार किया था, वैसे ही मेरे पूर्वकृत कर्मों को भुलाकर अपनी स्वीयता (तू मेरा है इस भाव) की सिद्धि के लिए मेरे द्वारा समर्पित दीप आदि सर्व सामग्री को अंगीकार कीजिए।।

### धनतेरस

भविष्य पुराण के अनुसार आज के दिन लक्ष्मीजी के साथ धन्वन्तरिजी की विधिपूर्वक पूजा करने से धनसंपत्ति की वृद्धि और शारीरिक एवं मानसिक



आरोग्य की प्राप्ति होती है।... ये मर्यादा मार्गीय जीव के लिए है। श्रीमहाप्रभुजी ने चतुर्थश्लोकी में पुष्टिजीव के धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को समझाते हुये श्रीकृष्ण को ही हमारा सच्चा 'धन' कहा है। आज के शुभदिवस पर हमारा प्रभु के चरणों में द्रढ विश्वास और भक्ति रूपी धन में वृद्धि हो, लक्ष्मी रूपी लौकिक धन का विनियोग अलौकिक धन रूपी लक्ष्मी पति की सेवा में हो, और प्रभुचितन द्वारा प्रभु की लीला रूपी 'धन्य रस' का अनुभव हर पल बढ़ता रहे यही धनतेरस के शुभदिन पर मनोकामना और शुभकामना..।

**SARASWATI TEXTILES**  
**H.NO.33, GALA NO.105, NEW KANERI,**  
**PADMANAGAR, FULEWADI COMPOUND,**  
**BHIWANDI- 421302**

**Haresh V Kukreja**  
**Mobail no**  
**8879358237.9323808748**



उत्सव दीप्णी माह नवंबर			
दि.	वार	तिथि	दिवात
आसो सुद			
४	रवि	१२	रमा ओकादशी व्रत, गोवत्स द्वादशी (वाद्यनारस) (द्वादशी आने सुयोध्य थी क.२५-२६ पर्यन्त छे).
५	सोम	१३	धनत्रयोदशी-धनतेरस (त्रयोदशी आने सुयोध्यथी क.२३-२४ पर्यन्त).
६	मंगल	१४	नरक चतुर्दशी-रूप चतुर्दशी, (चतुर्दशी आने सुयोध्यथी क. २२-२६ पर्यन्त छे), अत्यंग स्नान आने प्रातः क.०५-१२ पछी अने सुयोध्य पूर्व करावजुं).
७	बुध	३०	दीपावली, दीवाणी, काननगाह, हटडी, शारदापूजन, दर्शअमावास्या, अन्वाधान, (अमावास्या आने सुयोध्य थी क.२१-३४ पर्यन्त रहे छे), गुजराती वर्ष वि.सं. २०७४ समाप्त.
कार्तिक सुद			
८	गुरु	१	छष्टि, गोवर्धनपूजा, अन्नकुटोत्सव, (आने चन्द्रदर्शन छे गोडीडा नही) गुजराती वर्ष वि.सं. २०७५ साधारण नाम संवत्सर आरंभ, गुजराती भेसतुं वर्ष, नूतन वर्षाभिनिन्दन.
९	शुक्र	२	यमद्वितीया, भाषणीय (द्वितीया आने सुयोध्यथी क.२१-१० पर्यन्त छे).
१२	सोम	५	लाभापंचमी
१६	शुक्र	८	गोपाष्टमी, प्रथम कुंडवारो.
१७	शनि	९	अक्षय नवमी, कृतयुगादि, कुम्भांशान, श्रीप्रभुनी आने शृंगार-गवालमां नव परिक्रमा करवी.
१९	सोम	११	प्रभाषिनी ओकादशी व्रत (भद्रा आने नपोरे क. १४-३० समय समाप्त थाय छे) आने सांभे लोग-संध्यामां (नपोरे क.१४-३० पछी) मंडप-देवोत्थापन -पंचामृत वगैरे करवुं, प्रतिवार्षिक तुलसी पूजन.
२२	गुरु	१४	अन्वाधान
२३	शुक्र	१५	छष्टि, कार्तिक स्नान समाप्त अथवा चातुर्मास्य नियम समाप्त (पेभछे) अथाद सुद पूनमना रोज नियम दीया होय तेमना माठे), गोपमासारंभ -प्रतयथा.
कार्तिक वद			
२४	शनि	१	अथवा गोपमासारंभ
३०	शुक्र	८	श्री गुसांछुना द्वितीयवालय श्री गोविन्दरायछु (मृग वि.सं. १५६९) नो उत्सव.

पिछले कई सालों से देश में गौ हत्या के विरोध में गौरक्षा का अभियान चल रहा है। होना भी चाहिए, कई धार्मिक संस्कारों की तरह गौरक्षा का विचार अपने आप में एक सुंदर विचार है। गौमाता जो आजीवन हमें अपने दूध-दही-घी, आदि से पोषित करती है, गौमूत्र विज्ञान की दृष्टि से भी और ज्ञान की दृष्टि से भी गुणों से भरा है। ऐसे अपने इन सुंदर उपहारों से जीवनभर हमारा हित करती है। जिसकी रचना भगवान ने मनुष्यों के कल्याणार्थ आशीर्वाद रूप से की है। अतः इस पृथ्वी पर गौमाता मनुष्यों के लिए भगवान का प्रसाद रूप है। और इस लिए ही हमारे शास्त्रों ने भी गौ को माता कहा है। गौमाता हमारी वैदिक संस्कृति, धर्म, संस्कार एवं सभ्यता का प्रतिक है।

गौमाता की रक्षा के लिए देश के कोने-कोने में न जाने कितने रक्षा दल बने हैं। सरकार ने भी कई राज्यों में गौहत्या के लिए कई कानून लागू किये हैं। जिसके अनतर्गत गौहत्या करने वालों को उम्रकैद की सजा हो सकती है। इस नियम का उद्देश्य गाय लाने-ले जाने, काटने और गौमांस बेचने पर रोक लगाना है। भारत के २९ में से १८ राज्यों में गौ-हत्या पर पूर्ण या आंशिक रोक है। और गुजरात सरकार ने तो गुजरात में पहले से भी गौ रक्षा का कानून और कड़क बना कर गौ हत्या लिए गुजरात के श्री विजय रुपानीजी की जितनी लेकिन गौ-हत्या पर पूरे प्रतिबंध के मायने हैं बैल, सांड और भैंस को काटने और खाने की नहीं है? क्या वो जीव नहीं हैं? अगर आप हिन्दू हो तो गौमाता हमें इतना कुछ देती हैं तो बैल भी खेती में हल है। ऐसे कई मूक प्राणी हैं जो हमारे बोझ ढोते हैं और जीते हैं, यह संसार में एक संत की तरह हैं, निस्वार्थ। दायित्व है।

**गौ सेवा से करे गौरक्षा**  
 लेखक- श्री गिरिराजजी शास्त्री जी

पर ऐसा होता नहीं है, बल्कि गौरक्षा का भी मुद्दा जब जब उठा है तो सिर्फ राजनीति करने के लिए या फिर सुर्खियों में बने रहने के लिए.. जब कि कई तो गौरक्षा कैसे होगी, ये जानते तक नहीं। भारत की ८० प्रतिशत से ज्यादा आबादी हिंदू है जिनमें ज्यादातर लोग गाय को माता तो कहते हैं, पर उसकी रक्षा के लिए कुछ भी नहीं करते। गौ को माता मानते हो, पूजते हो, लेकिन सच में हमारा असली उद्देश्य गौरक्षा होता तो आज गाय बाहर सड़को पर लावारिस, भूखी, कचरे के ढेर से भूख मिटाती देखने ना मिलती। आज ८५ प्रतिशत लोगों के पैरों में चमड़े के जूते होते हैं, करीब ७० प्रतिशत लोगों की जेब में चमड़े के वोलेंट और पर्स हैं, वह न होते।

गाय के बारे में हिंदू समाज का रवैया ही सही नहीं है। वो सिर्फ गाय को माता कहते हैं, उसे तिलक लगाते हैं और उसके नाम पर झगडा करते हैं और कुछ लोग गौ रक्षा रैली निकालने को रक्षा का तरीका मान लेते हैं! इससे होगी रक्षा!! अरे सच में हिन्दू धर्म को मानते हो तो शास्त्र में बताये सभी धर्म का पूरी रीत से पालन करो, हमारे धर्म में केवल गाय को ही नहीं पृथ्वी और नदी को भी माता कहा है, उनकी रक्षा भी समाज का दायित्व है। पर उसकी रक्षा के लिए कोई सार्थक प्रयास नहीं करता। वास्तव में गौमाता की सेवा और रक्षा करना चाहते हैं तो...ऐसे करें गौरक्षा---

घर में गौ ग्रास जरूर निकालें, हरी सब्जी का उपयोग करने के उपरांत जो हरा चारा निकलता है उसे कूड़ा दान में न डालते हुए गौमाता को खिलाएं, रोज अपनी कमाई का कुछ अंश गौमाता के लिए निकालें व इसे गौमाता के लिए ही खर्च करें, या किसी गौशाला में जाकर भी इस राशि को दान कर सकते हैं। अपने घर में छोटे बच्चों को गौमाता का महत्व समझाएं, ऐसी वास्तु का उपयोग करने से बचें जिसको बनाने हेतु गौ को कष्ट व पीडा पहुंचाई गई हो, गौमाता पर हो रहे अत्याचारों को रोकने में अपना सहयोग प्रदान करें, शाकाहारी बने, माँसाहारियों का सामाजिक बहिष्कार करें...ऐसी गौमाता जो हमारे कृष्ण को भी अत्यंत प्रिय है, गौमाता की कई सेवाएँ हैं जिसका पालन हिन्दू होने के नाते हमें करना चाहिए। जैसे कि तुरंत कुछ न कर सके तो एक कार्य जरूर करें कि हमारे पूरे परिवार के लोग आज से गाय का ही दूध पीने का व्रत आग्रह पूर्वक लेते हैं, ऐसा नियम लेने मात्र से ही पूरी एक कोलोनी के लोग अगर यह व्रत लेलें तो ग्वाले को गाय का दूध आपको देने हेतु गाय का पालन पोषण करना ही होगा और गाय की रक्षा और सुरक्षा में आप अपना योगदान दे सकेंगे और गाय के दूध से मिलने वाले आयुर्वेदिक स्वास्थ्य लाभ को भी प्राप्त कर अपने बच्चों और औरों को समझा सकते हैं।

पुष्टिमार्ग में भी भगवदसेवा के अंग रूप गौसेवा का विधान है। हमारे श्रीवल्लभ, श्रीगोपीनाथ एवं श्रीविठ्ठल नाथ भी गौ के प्रति पूर्णतः समर्पित थे। व्रज में गौ रक्षा के हेतु ही श्री विठ्ठलनाथजी को "गोस्वामी" अर्थात गोकुल के श्रीगोसाई के सम्मान से विभूषित करते हुए यह पदवी भेट की गई थी।

गौसेवा एवं गौरक्षा वैदिक धर्म में आस्था रखनेवाले प्रत्येक जीव का कर्तव्य-धर्म है। हम स्वयं ही गौमाता की ऐसी सेवा, पूजा करें कि आसपास के और विरोधी धर्म के लोगों के भी गौमाता के सजदे में सर झुक जाए।

कई लोगों ने गाय को 'राष्ट्रिय पशु' घोषित करने की भी मांग करी है, पता नहीं इससे क्या ज्यादा बदलेगा! तत्कालीन समय में देश में हिन्दुओं के मध्य ही मतभेद हैं, और धर्म के नाम पर कुछ लोग इसे बढ़ने के लिए अवसर की तलाश में रहते हैं, हमारा देश हिन्दू प्रधान देश अवश्य है पर केवल हिन्दुओं का देश नहीं है। ऐसा कर के दूसरे धर्म के लोगों को अलग-अलग करने की कोशिश करते रहे हैं।

धर्म के नाम पर किसी भी प्रकार की लड़ाई करने से पहले एक हिन्दू नागरिक होने के नाते स्वयं हम गौसेवा कर के अपने धर्म के प्रति अपने कर्तव्य का पालन करें ये अति आवश्यक है। धर्म की रक्षा आवश्यक है, पर धर्म की रक्षा जुलूस या रैली निकाल कर नहीं होती, धर्म की रक्षा के लिए धर्म का आचरण अनिवार्य होता है।